ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 117-121
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

टैगोर के राष्ट्रवादी विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

1. डॉ0 विजय कुमार वर्मा
2. रेनू

1. एसोसिएट प्रोफेसर–राजनितिक शास्त्र विभाग, 2. एम0फिल0 बुद्धिस्ट स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Received- 16.02.2022, Revised- 21.02.2022, Accepted - 25.02.2022 E-mail: vijayvermadu@gmail.com

सारांशः *– भारतीय राष्ट्रवाद का उदय ब्रिटिश राज के खिलाफ स्वतंत्रता संघर्ष के दौरानहुआ। यदि हम अपने स्वयं के इतिहास में पीछे मुड़कर देखें, तो बहुत से विचारक हैं जिन्होंने राष्ट्रवाद की विभिन्न वैकल्पिक आख्यान प्रदान किए हैं जो राष्ट्रवाद की एक गंभीर समझ के खिलाफ चेतावनी देते हैं' टैगोरकी राष्ट्रवाद की सच्ची भावना भी उनके व्यापक मानवतावादी सरोकार में निहित है, न कि सीमित राजनीतिक रणनीति में।प्रथम विश्व युद्ध के दौरान कट्टर राष्ट्रवाद के प्रसार ने उन्हें इसे एक बुरी महामारी के रूप में व्याख्या करने और दोष देने के लिए मजबूर किया। वह उग्र राष्ट्रवाद के लोकप्रिय विचार को नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे जो राष्ट्रो को अन्य राष्ट्रों को उनके संसाधनों को हथियाने व उनके शोषण के लिए प्रोत्साहित कर रहाथा। टैगोर के राष्ट्रवादी विचारों पर वर्तमान में पुनर्विचार किया जाना अति आवश्यक है।*

टैगोर व राष्ट्रवाद ऐसे कई विद्वान हुए हैं जिन्होंने राष्ट्रवाद शब्द को परिभाषित करने का प्रयास किया है। एंडरसन "राष्ट्रवाद को उन लोगों के बीच बंधन के रूप में परिभाषित करते हैं जो तब अस्तित्व में आते हैं जब एक राष्ट्र के सदस्य खुद को और अपने हम वतन को एक राष्ट्र का हिस्सा मानते हैं।"[1] गेलनर के अनुसार" एक राष्ट्र का निर्माण तब होता है, जब किसी श्रेणी के सदस्य अपनी साझा सदस्यता के आधार पर एक दूसरे के लिए कुछ पारस्परिक अधिकारों और कर्तव्यों को दृढ़ता से पहचानते हैं।

अपने अन्य समकालीन राजनीतिक दार्शनिकों के समान रवींद्रनाथ भी देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थे। उन्होंने भारत में अंग्रेजी राज्य की तीव्र आलोचना की। टैगोर की राष्ट्रीय भावना उनके प्रसिद्ध गीत जन गणदृ मन अधिनायक जय है भारत भाग्य विधाता से पता चलती है जिसमें उन्होंने भारतीय एकता का संकेत दिया और ईश्वर से भारत को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। राष्ट्रवाद पर टैगोर के विचारों की स्पष्टता के लिए उनके द्वारा की गई राष्ट्रवाद की आलोचना का अध्ययन करना अति आवश्यक हैं।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय राष्ट्रवाद, उदय ब्रिटिश राज, स्वतंत्रता संघर्ष, राष्ट्रवाद, वैकल्पिक आख्यान, देशभक्ति।

यूरोपिय व पश्चिमी राष्ट्रवाद की आलोचना–टैगोर के अनुसार "अपने देश की पूजा करना उस पर दुर्भाग्य लाने जैसा होगा।"[2] अब प्रश्न उठता है कि उन्हें इस राष्ट्रवाद से इतनी समस्या क्यों थी? इस प्रश्न का जवाब टैगोर के लेख राष्ट्रवाद में मिलता है, वे लिखते हैं, "भारत की वास्तविक समस्या राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक है। भारत पश्चिमी देशों की राष्ट्रवाद की नकल कर रहा है जो यहाँ पनप ही नहीं सकता क्योंकि, भारत में पश्चिमी देशों के मुकाबले समाज में काफी विविधता है।"[3] टैगोर मानते थे कि राष्ट्रवाद एक ताकत की लड़ाई है, जिसमें मनुष्य अपनी सारी ऊर्जा गँवाकर राष्ट्र निर्माण में इतना लग जाता है कि वह अपनी खुशी और आजादी के बारे में भी नहीं सोच पाता।

राष्ट्रवादके विषय में टैगोर के यह विचार यूरोप में उग्र राष्ट्रीयता के स्वरूप को देखकर अभिव्यक्त किए गए थे, जहां पर प्रत्येक राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए पड़ोसी राष्ट्र पर आक्रमण की नीति अपना रहा था। इसी यूरोपीय राष्ट्रवाद को देखकर टैगोर ने कहा " जब राजनीति और व्यापार का यह संगठन जिसका दूसरा नाम राष्ट्रवाद है उच्चतर सामाजिक जीवन के समन्वय की कीमत पर सर्वशक्तिमान बन जाता है तब वह मानवता के लिए बुरा दिन होगा।[4]

ऐसा नहीं है कि टैगोर राष्ट्रवाद के कटु आलोचक थे टैगोर राष्ट्रीयता को आवश्यक और अनिवार्य मानते थे बशर्ते कि वह अन्य राष्ट्रों से संघर्ष की ओर ना ले। उन्होंने कहा था "आदर्श रूप में वह राष्ट्रवाद जो कि किसी जनता के सामूहिक आत्म हितोकी अभिव्यक्ति के लिए खड़ा होता है, यदि वह अपनी सच्ची सीमाओं को बनाए रखता है तो उसे अपने लिए लज्जित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।"[5] आत्म हित, अभिव्यक्ति तथा स्वधर्म पालन की सीमा में राष्ट्रवाद सर्वदा उचित है। यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास के इतिहास को देखकर टैगोर को यह लगा कि राष्ट्रीयता की भावना को अत्यधिक बढ़ाने से स्वयं मानव सभ्यता को खतरा उत्पन्न हो जाता है। उन्होंने जर्मनी, इटली, इंग्लैंड तथा अन्य यूरोपीय राष्ट्रों की गतिविधियों का अध्ययन करके यह पाया कि शक्ति अर्जित करके ही उन्होंने अपने स्वार्थों को पूर्ण करने के लिए संसार में सब कहीं साम्राज्यवाद फैलाने की कोशिश की। टैगोर का मत था कि राष्ट्रवाद शब्द की उत्पत्ति राष्ट्र–राज्य शब्द से हुई है जो और कुछ नहीं बल्कि पूंजीवाद और मशीनीकरण के पश्चिमी विचारों का अवतार है। पश्चिमी राष्ट्रवाद शक्ति और धन की तीव्र और अंतहीन लालसा को जन्म देता

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

है। जिसमें नैतिकता, सामाजिक और नैतिक मूल्यों का अभाव है, जो उनके राष्ट्रवाद को तुच्छ और आक्रामक बनाता है।[7] इसलिए वह भारतीयों को चेतावनी देते हैं कि–" हमें, भारत में, अपना मन बना लेना चाहिए कि हम दूसरे लोगों का इतिहास, उधार नहीं ले सकते हैं और अगर हम खुद को दबाते हैं तो हम आत्महत्या कर रहे हैं। जब आप उन चीजों को उधार लेते हैं जो आपके जीवन से संबंधित नहीं हैं, तो हम अपने जीवन को कुचलने की सेवा कर रहे होते हैं।मेरा मानना है कि भारत कोअपने क्षेत्र में पश्चिमी सभ्यता के साथ प्रतिस्पर्धा करना अच्छा नहीं हैं।"

उन्होंने तर्क दिया कि राष्ट्रवाद यूरोप के "सबसे हॉनिकारक निर्यात" में से एक था, क्योंकि यह कारण या स्वतंत्रता काशिशु नहीं था, बल्कि इसके विपरीतः राजनीतिक महीसवादके, उत्कट रोमांटिकतावाद का, जिसका परिणाम, अनिवार्य रूप से, स्वतंत्रता का विनाश है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम व राष्ट्रवाद की आलोचना– टैगोर को यह देखकर दुख हुआ कि कैसे भारतीय राष्ट्रीय नेताओं ने भारत पर राष्ट्रवाद के पश्चिमी परिभाषा को जबरदस्ती थोप दिया है। टैगोर ने तर्क दिया कि भारत मुख्य रूप से कई संस्कृतियों और विरासतों को एक साथ मिलकर एक सामाजिक इकाई के रूप में कार्य करने के लिए अपने पश्चिमी समकक्षों के विपरीत था, जो आम तौर पर एक सामान्य सांस्कृतिक, वंश और मिलनसार साझा करते थे । अपनी लघु कहानी "शुद्धिकरण"[8] में, टैगोर गांधी के सत्याग्रह आंदोलन की स्वतंत्रता संग्राम के नाम पर भारतीय राष्ट्रवादी के पाखंडी, बचकाने रवैये को उजागर करते हैं। उनके आदर्श आंतरिक रूप से आत्म–स्वायत्तता, बहुलवाद और धार्मिक सहिष्णुता की भारतीय परंपरा के खिलाफ थे,। टैगोर के अनुसार राष्ट्रवाद का विचार आंतरिक रूप से गैर–भारतीय या भारतीय विरोधी है, भारतीय सभ्यताकी धार्मिक और सांस्कृतिक बहुलता के सिद्धांतों के खिलाफ एक अपराध है, कैसे राष्ट्रवाद सामुदायिक जीवन को नष्ट कर देता है और जातीय–धार्मिक हिंसा के दानव को मुक्त करता है।

टैगोर के अनुसार, भारत को यूरोप से सीखने की कोई जरूरत नहीं है भारत में हमेशा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद व एकता की भावना रही है जिसमें ब्रिटिशों के कारण द्वंद उत्पन्न हो गया है परंतु हमें उसे पुनर्जीवित करना होगा, विभिन्नता होते हुए भी एक सामान्य तत्व है भारतीय संस्कृतिजो हम सब को एक दूसरे से ,इसके लिए सीमा, एक धर्म व नस्ल की आवश्यकता नहीं है। भारत में संस्कृति व आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की आवश्यकता है, जिसमें मानवता व विश्व एकता पर बल दिया जाए न कि उग्रताव संकीर्णता पर।

टैगोर के लिए राष्ट्रवाद का अर्थ–" मानवीय राष्ट्रवाद" टैगोर ने हमेशा मानवता को देशभक्ति से ऊपर माना, टैगोर ने कहा, "देशभक्ति हमारा आखिरी आध्यात्मिक सहारा नहीं बन सकता, मेरा आश्रय मानवता है। मैं हीरे के दाम में ग्लास नहीं खरीदूँगा और जब तक मैं जिंदा हूँ, मानवता के ऊपर देशभक्ति की जीत नहीं होने दूँगा।"[9]

टैगोर के लिए "केवल एक ही इतिहास है–मनुष्य का इतिहास। सभी राष्ट्रीय इतिहास केवल अध्याय हैं"[10] वह "'सच्ची स्वतंत्रता' की अवधारणा के समर्थक थे,। "वह 'राष्ट्र' को एक यांत्रिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लगाए गए सामाजिक निर्माण के रूप में परिभाषित करतेथे। उनके अनुसार, जिन लोगों को अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता मिली है, वे आवश्यक रूप से स्वतंत्र नहीं हैं। भारत के पुरातन आध्यात्मिक इतिहास का आह्वान करते हुए, टैगोर ने अपने देशवासियों के लिए 'सच्ची स्वतंत्रता' की एक दुस्साहसिक समझ को आत्मसात किया, जो एक ऐसी स्थिति है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति खुद को ' सर्वोच्च कारण (Supreme Reason)' के करीब ले जाता है। राजनीतिक स्वतंत्रता व्यक्तियों के व्यक्तित्व को पूर्णता के इस स्तर तक नहीं बढ़ाती है। उन्होंने 'सच्ची स्वतंत्रता' के चार चरणों की कल्पना की, जो इस प्रकार हैं:–

1. व्यक्तिगत स्तर पर स्वतंत्रता की प्राप्ति
2. सामुदायिक स्तर पर स्वतंत्रता की प्राप्ति
3. सामुदायिक स्तर से ब्रह्मांड तक स्वतंत्रता की प्राप्ति पर
4. ब्रह्मांड से अनंत और उससे आगे तक स्वतंत्रता की प्राप्ति

वे राष्ट्रवाद का अर्थ, किसी भी व्यक्ति द्वारा अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, कलाओं, संगीत, साहित्य तथा पूर्वजों की गौरवमयी परम्पराओं के प्रति श्रद्धापूर्ण समर्पण को मानते थे। वे राष्ट्रवाद के उस रूप को अस्वीकार करते थे, जिनमें सामाजिक संघर्ष, जातीय उग्रता, धार्मिक उन्माद एवं राजनैतिक संकीर्णता तथा सांप्रदायिकता फैलती हो।[11]

टैगोर की राष्ट्रवाद की धारणा मुख्य रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन पर आधारित है, जहां दुनिया को एक घोंसले के रूप में स्वीकार किया गया था। इस तरह टैगोर राष्ट्रवाद की सामान्य धारणा से खुद को अलग करने का प्रयास कर रहे थे और इसे शांति, सद्भाव और कल्याण जैसे विचारों से जोड़ने का प्रयास कर रहे थे। वह कहते हैं कि अगर भारत दुनिया में योगदान देने का फैसला करता है। यह केवल मानवता के रूप में होना चाहिए।[12] मानवतावाद का टैगोर का विचार किसी

भी सीमा या बाधाओं से परे है और बड़े पैमाने पर एक सामान्य स्थान की तलाश करता है, जहां मानवता किसी अन्य प्रकार की पहचान से पहले आती है। टैगोर के अनुसार, नानक, कबीर, चौतन्य जैसे संतों ने भारतीय मन में मानवता की ज्वाला प्रज्वलित की, लेकिन दुर्भाग्य से, यह समय के साथ जातिवाद के आक्रामक उदय और हमारे समाज के जाति–आधारित विघटन के साथ फीका पड़ गया। नस्ल की शुद्धता और अशुद्धता जैसे विचारों ने सदियों से लाखों लोगों का नरसंहार किया है। यहां तक कि दो विश्व युद्धों और अन्य नस्लीय संघर्षों को श्रेष्ठता की झूठी धारणाओं के आधार पर उकसाया गया था।
टैगोर, निश्चित रूप से, दृढ़ता से यह मानते थे कि भारत में कभी राष्ट्रवाद नहीं था–

" भारत में कभी भी राष्ट्रवाद की वास्तविक भावना नहीं रही है। भले ही बचपन में मुझे सिखाया गया था कि राष्ट्र की मूर्तिपूजा लगभग ईश्वर और मानवता के प्रति श्रद्धा, से बेहतर है मुझे विश्वास है कि मैंने उस शिक्षा को पार कर लिया है और यह मेरा विश्वास है कि मेरे देशवासी वास्तव में अपना भारत प्राप्त करेंगे उस शिक्षा के खिलाफ लड़ कर जो उन्हें सिखाती है कि एक देश मानवता के आदर्शों की तुलना में बढ़ा होता है।

टैगोर का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता के अलावा मन की स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें संकीर्णता को छोड़ देना चाहिए और अपने आंतरिक और बाहरी भावों में अधिक व्यापक होना चाहिए, जो मन की स्वतंत्रता का विस्तार करते हैं। अंततः, मन की यह स्वतंत्रता मानव आत्मा और व्यापक मानव जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करती है। आध्यात्मिक एकीकरण, प्रेम और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाले राष्ट्र किसी भी युग में स्थायी स्थान पा सकते हैं। इस प्रकार, भारतीय राष्ट्रवाद या किसी भी प्रकार का राष्ट्रवाद और कुछ नहीं, बल्कि मानवता और मानव कल्याण के एकीकृत आदर्शों का मिश्रण है।

टेगौर की अंतराष्ट्रीयवाद की धारणा– टैगोर एक राष्ट्रवादी होने के साथ साथ एक अन्तर्राष्ट्रवादी भी थे। वे संकुचित राष्ट्रवाद में विश्वास नहीं करते थे बल्कि उनका विश्वास विश्व–भातृत्व में थासाथही उन्होंने एक विश्व – सरकार की परिकल्पना की थी। उनका मत था कि यदि प्राच्य व पाश्चात्य सभ्यताओं को मिश्रित कर दिया जाए, तो विश्व शांति, विश्व – एकता तथा विश्व सरकार की स्थापना संभव है। टैगोर ने कहा "मानव प्रजाति को एक उन्मुख और सार्वभौम मैत्री की और आगे बढ़ना है, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र सबके कल्याण के लिए सौंदर्य और कुशलता का अपना विशेष योगदान देगा। "भारत राष्ट्र की समस्याओं पर विचार करने हेतु टैगोर ने अनुभव किया कि अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बिना ये समस्याएं नहीं सुलझायी जा सकती। अंतर्राष्ट्रीयताकी भावना के प्रसार के लिए टैगोर शिक्षा को प्रमुख माध्यम मानते थे, इसीलिए उन्होंने 1921 में एक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय 'विश्व–भारती' की स्थापना की। टैगोर का सपना था कि अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के माध्यम से विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का संगम कराकर एक ऐसी नवीन संस्कृति की धारा प्रवाहित की जाए जो सभी के लिए पूज्यनीय हो तथा विश्व मानवता के समग्र विकास में सहायक हो। अन्ततः टैगोर का यही सपना संयुक्त राष्ट्र संघ के रूप में पटल पर उभरा। वस्तुतः टैगोर मानवता के पुजारी थे। उनके विचारों की संवेदना समस्त विश्व की मानव जाति के प्रति एक समान थी अर्थात वे पक्षपात की भावना से परे थे, परंतु साथ ही उन्हें विश्व की किसी जाति द्वारा दूसरी किसी जाति का अपमान भी बर्दाश्त नहीं था। टैगोर इस मान्यता के समर्थक थे, जिसमें मानव अस्तित्व के खुशहाल और गौरवपूर्ण अस्तित्व की भावना सर्वोपरि हो। वे भावनात्मक स्तर पर अपने देश भारत से जुड़े थे, परंतु संवेदना के स्तर पर उन्होंने समूचे विश्व को एक परिधि के अन्दर ला दिया था, जिसमें नस्लवाद के लिए कोई जगह नहीं थी। अतः वे भारत के ही नहीं, समस्त विश्व के नागरिक थे अर्थात् एक सच्चे अंतर्राष्ट्रवादी थे।

समकालीन प्रासंगिकता– टैगोर कहते हैं भारत को राष्ट्रवाद के अर्थ को स्वयं समझना चाहिए और राष्ट्रवाद के संबंध में "पुराने आदर्शों" की नकल करना बंद करना चाहिए। राष्ट्र तभी समृद्ध होगा वह यह महसूस करेगा कि उसे नैतिक पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है, न कि राजनीतिक व्यवस्था की। राष्ट्रीय सीमाएं प्रकृति में केवल भौतिक होनी चाहिए, मानवता को बढ़ावा देने और राष्ट्रों के बीच एकजुटता को बढ़ावा देने में बांधक नहीं होनी चाहिए, मानवता को राष्ट्रवाद से बड़ा आदर्श मानते थे। भारतीयों को आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से एक दूसरे के बीच एकजुट रहने का संदेश देते थे।

मुख्य प्रश्न, वर्तमान में उनके विचारों की प्रासंगिकता और वैधता के बारे में उठता है। यदि ये सभी धारणाएँ इतनी आदर्श और उचित हैं तो क्या वे नैतिक और राजनीतिक संकट से भरी वर्तमान दुनिया में भी प्रसांगिक हैं ?

टैगोर यूरोप में बढ़ती हुई राष्ट्रवाद की यांत्रिक धारणा के कटु आलोचक थे, क्योंकि इस राष्ट्रवाद की धारणा की आड़ में यूरोपीय राष्ट्र राष्ट्रवाद के नाम पर अनेक राष्ट्रों का साम्राज्यवाद के द्वारा शोषण कर रहे थे और इससे सभ्यता कारण या सिविलाइजेशन मिशन के नाम पर उचित ठहरा रहे थे। पश्चिमी देशों के शोषण को हम वर्तमान में भी देख सकते हैं हालांकि उसके रूप या नाम में अवश्य परिवर्तन हुआ है, परंतु उसके पीछे के छुपे हुए अर्थ में नहीं। आधुनिक संदर्भ में देखने के लिए

बस हमें ''साम्राज्यवाद'' शब्द को ''मानवीय प्रयास'' से बदलना होगा। पश्चिम अभी भी ''आजादी'', ''मानवाधिकार'', ''आतंकवाद का मुकाबला'' और उनके सर्वकालिक पसंदीदा ''जनतंत्र'' के बैनर के तले एक मजबूत संसाधन आधार के साथ कम शक्तिशाली देशों की आलोचना करना और शोषण करना जारी रखता है। पुराने दिनों की तरह ही मूल आबादी को दोस्ती और एकजुटता का झंडा पेश करते हैं, ओर आक्रमण करते हैं, मारते हैंव बमबारी करते हैं।

टैगोर का कहना है, भारत में पश्चिम के समान एक राष्ट्रवाद की भावना संभव नहीं है। देशभक्ति की चार दीवारीहमें बाहर विचारों से जुड़ने की आजादी से हमें रोकती है, साथ ही दूसरे देशों की जनता के दुख दर्द को समझने की स्वतन्त्रता भी सीमित कर देती है। स्वराज के संदर्भ में टैगोर ने कहा, ''यह मोह माया है, असली आजादी तो मानसिक आजादी है।'' मानसिक आजादी से उनका आशय था कि तर्कपूर्ण बातों से स्वयं की सोच बनाओ।

यदि देखा जाए तो स्वतंत्रता के 75 वर्षों बाद भी हम राष्ट्रवाद के अर्थ को समझ नहीं पाए हैं। राष्ट्रवाद का अर्थ अपने को सर्वोच्च दिखाना व दूसरों से नफरत करना नहीं होता, बल्कि अपने राष्ट्र ,एकता, धर्म व जाति के साथ दूसरों के राष्ट्र, धर्म,संस्कृति व जाति का सम्मान करने का नाम है। वर्तमान समय में इसका ठीक उल्टा हो रहा है। हम अपने राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से सर्वोच्च दिखाने का प्रयास करते रहते हैं बड़ें–बड़ें राष्ट्र छोटे राष्ट्र का शोषण कर रहे हैं जैसे रूस द्वारा यूक्रैन में सीमा विस्तार के लिए किए जा रहे हमले, साथ ही राष्ट्र अपने बहुमत के धर्म व जाति को सर्वोच्च दिखाने के प्रयास में अन्य के साथ भेदभाव पूर्ण व बहिष्कृत व्यवहार कर रहे हैं। भारत में हम हिंदू राष्ट्र की बनती हुई तस्वीर को स्पष्ट रूप में देख सकते हैं जिसके अंतर्गत अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बनाया जा रहा है जैसे गोवध,मांस बिक्री पर प्रतिबंध, नागरिकता कानून व प्रमुख स्थानों के नामों में परिवर्तन इत्यादि के द्वारा।

वर्तमान में राष्ट्रवाद ने उग्र देशभक्ति का रूप धारण कर लिया है जहां मानवता की अनुपस्थिति है। राष्ट्रवाद के दो आधार हैं, पहला देश भक्ति, देश व संस्कृति से अत्यधिक प्रेम, दूसरा आंतरिक समस्या, शोषणा, समानता जैसे जाति प्रथा, जाति व धार्मिक हिंसा पर शांत रहना यदि आप इसका उल्टा करते हैं अर्थात आप में देशभक्ति की कमी व अन्य समस्याओं पर आवाज उठाते हैं तो आप राष्ट्रीय विरोधी की श्रेणी में आ जाते हैं। टैगोर को इसी बात का डर था कि हम पश्चिम के राष्ट्रवाद के अर्थ को ना अपना लें, जो अपनी सर्वोच्चता वह दूसरों के शोषण पर आधारित थी। इसीलिए टैगोर पश्चिम के राष्ट्रवाद की खिलाफ थे, क्योंकि उन्हें उसके हिंसक परिणामों का ज्ञान था। टैगोर के लिए मानवता राष्ट्र से ऊपर थी,वह हमेशा से उग्र राष्ट्रवाद के विरुद्ध थे, इसीलिए उन्होने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भी आलोचना की।[13]

टैगोर के अनुसार भारत जैसे समाज के सर्व धर्म समभाव के सिद्धांतों (सभी धर्मों के प्रति सम्मान) व वसुधैव कुटुम्बकम की उपनिषद की उक्ति (पूरी दुनिया एक परिवार के रूप में) को समकालीन जीवन में सभी राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की स्थिति, और राष्ट्र की सीमाके भीतर भी राजनीतिक क्षेत्र मेंअपना सकते हैं। इसी भावना से वह एक ऐसे संसार की कल्पना करते है जो ''संकीर्ण घरेलू दीवारोंके टुकड़ों में टूट कर न रह जाए''[14] वर्तमान में विभिन्न प्रकार की समस्या है जैसे आतंकवाद, पर्यावरण संरक्षण, परमाणु प्रतिस्पर्धा व विभिन्न प्रकार की बीमारियां जिनके समाधान के लिए सभी राष्ट्रों के एकजुट होने की आवश्यकता है।

टैगोर के बांग्ला उपन्यास 'घर–बाइरे' नायक निखिल प्रगतिशील सामाजिक सुधारों व राष्ट्रवाद का समर्थक था अपनी प्रेमिका बिमला से वह कहता है "मैं देश की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार हूँ, लेकिन मेरी पूजा का हकदार सत्य है, जो मेरे लिए देश से भी ऊपर है। अपने देश को ईश्वर की तरह पूजने का मतलब है, उसे अभिशाप देना।"[15] स्पष्ट है कि टैगोर ने इस उपन्यास के जरिये अति–राष्ट्रवाद के उन खतरों की ओर इशारा किया है जो बुनियादी मानवीय मूल्य एवं विश्व–बंधुत्व की भावना के विरुद्ध है।

निष्कर्ष– अतः स्पष्ट है कि टैगोर ऐसा राष्ट्रवाद चाहते थे, जो भयमुक्त और जीवंत हो। स्वतन्त्रता से उनका आशय था, ऐसी स्वतन्त्रता जिसकी कोई सीमा ना हो, जाति या धर्म का बंधन ना हो। राष्ट्रवाद का उनके लिए अर्थ था – एकता और भाईचारा। यदि हम वर्तमान में देखें तो जिस राष्ट्रवाद की चर्चा घर से लेकर पान की दुकान होते हुए न्यूज चौनलों में हो रही है, जिसे धर्म और समाज की चाशनी में डुबाया जा रहा है। हिंसा, कलह और घृणा देखने को मिलती है। यही वह राष्ट्रवाद है जिसके टैगोर कट्टर विरोधी थे। राष्ट्रवाद पर टैगोर के विचार समय से बहुत आगे हैं, और उन्हें जन–जन तक पहुंचाया जाना अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Anderson, Benedict 2006 & Imagined Communities Reflections on the Origin and Spread of

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

Nationalism, Published by Verso, London&New York.
2. Gellner, Ernest 2006 & Nations and Nationalism , Cornell University Press, Ithaca & New York.
3. Tagore, Rabindranath 1917 & Nationalism, The Macmillan Company, New York.
4. Ibid.
5. Tagore, Rabindranath 1921 & Creative Unity] Echo Library.
6. Ibid.
7. Chakraborty, Adhrish &Tagore's Humanist Nationalism and its Current Relevance, Applied world wide, 10 march2021.
8. Ibid 3.
9. Aikant]Satish C- & Reading Tagore: Seductions and Perils of Nationalism, Indian Institute of Advanced Study, Vol-5 2 June 2010- P-No- 54&55.
10. Ibid 3.
11. Ibid 7.
12. Ravande, Durgesh & Rabindranath Tagore*s perception of Indian Nationalism, The Bride Chrconicle, 15th Aug, 2021.
13. Ibid 3.
14. Tagore, Rabindranath (1913) & Gitanjali, Macmillan and co- Limited ST- Martin's Street, Lon don.
15. Tagore, Rabindranath (1921) &The Home and The World, Macmillan and co- Limited ST- Martin*s Street, London.

*****